ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025
Page No.- 91-97
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

डॉ. नंदिता दत्त
सहायक प्राध्यापिका,
हिंदी विभाग, नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज
(स्वायत्तशासित).

Corresponding Author :

डॉ. नंदिता दत्त
सहायक प्राध्यापिका,
हिंदी विभाग, नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज
(स्वायत्तशासित).

हिंदी और असमिया भाषा- साहित्य का अंतरसंबंध : मुहावरें और लोकोक्तियों के विशेष संदर्भ में

शोध सार : भाषा किसी भी जाति अथवा समुदाय की पहचान होती हैं और साहित्य उस पहचान को संगृहीत करते हुए उत्तर पीढ़ी के उसे संरक्षित करती हैं । लोक-साहित्य किसी भी भाषा-साहित्य का मूल-रूप हैं; उसे छोड़कर स्बंधित भाषा-साहित्य का अध्ययन अधूरा होगा । मुहावरें और लोकोक्तियाँ इसी लोक-साहित्य का अभिन्न अंग हैं, जो ज्ञान परंपरा, रीति-रिवाजों एवं संस्कृति को प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखती हैं । हिंदी और असमिया यद्यपि अलग अलग अपभ्रंश से उत्पन्न होने वाली भाषाएँ हैं; फिरभी दोनों भाषा के साहित्य में अंतरसंबंध परिलक्षित होता हैं । यहाँ लोकोक्ति और मुहावरों के माध्यम से इस विषय पर चर्चा की जाएगी ।

बीज शब्द : हिंदी, असमिया, भाषा, अंतरसंबंध, मुहावरें, लोकोक्तियाँ ।

भूमिका : प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का आपस में एक जुड़ाव परिलक्षित होता हैं, जिसे अंतरसंबंध का नाम दे सकते है । भारतीय आर्य भाषाओं के अंतर्गत ऐसी अनेक भाषाएँ हैं, जिनका उत्पत्ति का स्त्रोत एक हैं । भारत की सभी भाषाओं की जननी संस्कृत मानी जाती है । वे सभी भाषाएँ एक दूसरे के साथ संपर्क रखती हैं । उनके शब्दभंडार में समानता नज़र आती हैं; भाषा व साहित्य में भी सादृश्य परिलक्षित होता हैं । असमिया और हिन्दी भाषा के बीच भी यह संबंध परिलक्षित होता है । दोनों भाषाएँ भारतीय आर्य भाषा के अंतर्गत आते हैं । असमिया भाषा की उत्पत्ति 'मागधी' अपभ्रंश से हुई है । हिन्दी भाषा का मानक रुप मूलतः 'खड़ीबोली' है, साथ ही यहाँ अन्य हिन्दी प्रांत के शब्द-भंडार भी शामिल हैं, इसीलिए केवल एक अपभ्रंश से उसकी उत्पत्ति नहीं मानी जा सकती

है; गौरतलब यह है कि 'खड़ीबोली' की उत्पत्ति 'शैरसेनी' अपभ्रंश से हुआ हैं। इसके बावजूद भी दोनों भाषा के साहित्य में समानता परिलक्षित होती हैं। वर्तमान तुलनात्मक अध्ययन अपनी विस्तृत आयाम के साथ इन सभी भाषाओं को समेटकर आगे बढ़ रहा हैं। इस पद्धति के अंतर्गत दो से अधिक भाषाओं का अध्ययन व विश्लेषण किया जाता हैं; जिसके द्वारा प्रत्येक भाषा एक दूसरे के गुण-दोष व विशेषताओं से वाकिफ़ हो सकते हैं। भाषाविज्ञान के अंतर्गत भी तुलनात्मक पद्धति के सहारे दो से अधिक भाषाओं का अध्ययन किया जाता हैं। बहरहाल यह कहा जा सकता हैं कि तुलनात्मक अध्ययन की सहायता से सभी भाषाओं का आपसी संबंध और अधिक गहरा होता जाता रहा हैं। लोकसाहित्य प्रत्येक भाषा की धरोहर हैं। लोकोक्ति और मुहावरों का समावेश इसी लोकसाहित्य के अंतर्गत होता हैं। संबन्धित प्रदेश के जनजीवन के साथ इसका ओतःप्रोत संबंध रहता हैं, बल्कि यह कहना ज्यादा उचित रहेगा कि लोकोक्ति और मुहावरे जनजीवन की स्वाभाविक छवि को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। इसके अंतर्निहित भाव मानव जीवन के यथार्थ और दैनंदिन चर्या से परिपूर्ण हैं। असमिया में लोकोक्ति को प्रवचन कहते है और मुहावरे को फकरा-जोजना /जोजना कहा जाता हैं। प्रस्तुत संगोष्ठी पत्र में इन दोनों भाषाओं के लोकोक्ति और मुहावरों का तुलनात्मक दृष्टि से विश्लेषण किया जाएगा।

अध्ययन का उद्देश्य : लोकसाहित्य किसी भी साहित्य का प्रारंभिक रूप होता हैं। असमिया और हिन्दी के इस प्राचीन साहित्य का एक साथ अध्ययन करने से दोनों भाषाओं का लाभ होगा; अतः इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य कुछ इस प्रकार हैं:

(1) हिंदी और असमिया भाषा की लोकोक्ति और मुहावरों का स्वरूप, विशेषता आदि का अध्ययन करना।

(2) हिंदी और असमिया भाषा की लोकोक्ति और मुहावरों की एक तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना।

अध्ययन की प्रविधि : प्रस्तुत शोध-पत्र को सम्पूर्ण करने के लिए मूलतः निम्नलिखित पद्धतियों का सहारा लिया गया हैं; यथा:

(1) आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक,

(2) तुलनात्मक एवं

(3) अनुवाद

(4) लिप्यंतरण पद्धति (असमिया लिपि से देवनागरी लिपि तक लाने हेतु)

अध्ययन की सीमा : असमिया और हिंदी लोकसाहित्य के अंतर्गत लोकोक्ति और मुहावरे पर ही मूल रूप से प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा। उनमें भी जो सबसे लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध हैं; उनका विस्तृत रूप से विश्लेषण किया जाएगा।

मूल विषय: हिंदी और असमिया भाषा की मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ:

'लोकसाहित्य'-शब्द स्वयं अपने आप का परिचायक है। हिन्दी तथा असमिया साहित्य में लोकसाहित्य की भरमार पायी हैं। प्राचीन समय से लोगों के मुख मुख में प्रचलित साहित्य को ही लोकसाहित्य कहा जाता हैं। इसी लोकसाहित्य की अन्यतम विधा है- मुहावरे व लोकोक्ति। जिसे असमिया में क्रमशः फकरा जोजना/जोजना और प्रवचन कहते हैं। भिन्न प्रदेशों के लोक साहित्य में साम्य प्राप्त हैं, क्योंकि इनमें देश-काल-वातावरण से ऊपर उठकर मानव के आचार-विचार, नैतिक शिक्षा, मनोस्थिति आदि की बात की जाती हैं; और इन सभी को साधारणतः मानव की प्रवृत्ति के रूप में हम देख सकते हैं। मुहावरे: अरबी शब्द 'मुहावरः' हिन्दी में आकार 'मुहावरा' बन गया। मुहावरे का प्रयोग हम दैनंदिन जीवन में अक्सर करते रहते हैं, यह हमारी बातों को और अधिक मजेदार व आकर्षक बना देता हैं। मुहावरे में एक व्यंजना छिपी रहती है, यह हास्य

रसोत्पादक तो हैं, परंतु इनमें कही कही गहरा व्यंग भी छिपा रहता हैं। वासुनंदन प्रसाद के शब्दों में, "ऐसा वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, 'मुहावरा' कहलाता है।"[1]असमिया के फकरा जोजना/जोजना के लिए भी यही अर्थ लागू होता हैं। "मुहावरों का प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होते हैं।"[2] असमिया विद्वान सत्येंद्रनाथ शर्मा जी के शब्दों में, " फकरा आदि साधारण शब्दों में गूढ़ार्थक हैं, अविधा के अंतराल में एक गूढ़ अर्थ छिपा रहता हैं और कही कही परमार्थ विषयक अर्थ भी छिपा रहता है।"[3] इनमें निहित तत्व व रस से साहित्य को समृद्धि प्राप्त होती है, उसका आकर्षण बढ़ जाता है। "नीति शिक्षा प्रदान करना अथवा किसी बात का उदाहरण देकर लिखी जाने वाली दो या अधिक वाक्यों का समूह ही लोकोक्ति हैं; इन लोकोक्तियों से एक जाति के जीवन का परिचय प्राप्त हो सकता है।"[4] हिंदी व असमिया साहित्य के कुछ मुहावरों का विश्लेषण कुछ इस प्रकार किया जा सकता हैं-

1) हिंदी: **आस्तीन का साँप** = अर्थात ऐसा शत्रु, जो आपके साथ रहता है और चुपके आप पर वार करता है। **वाक्य**: आस्तीन का साँप पालना किसी मूर्खता से कम नहीं।

असमीया: **पानीर तलर काइट(पानी के अंदर रहने वाला काँटा)** = अर्थात छिपे रहनेवाला शत्रु, जो आपके साथ रहता और आपको पता भी नहीं चलता हैं। **वाक्य**: इमान दिने पानीर तलर काइट दाल देखाई नासिलो।(इतने दिनों से पानी के अंदर रहे काँटे को देख ही नहीं पा रही थी)-अर्थात साथ रहे गलत इंसान को पहचान ही न पा रही रही थी।

नीतिज्ञान: उपरोक्त दोनों मुहावरों से यही ज्ञान मिलता हैं कि हमे मित्रता में सावधानी बरतनी चाहिए और ऐसे लोगों को अपने से दूर रखना चाहिए जो हमारा तथा परिवार का अनिष्ट कर सकता है।

2) हिंदी: **अपने पाव आप कुल्हाड़ी मारना**= स्वयं अपना संकट मोर लेना, **वाक्य**: नेताओं से भिड़कर उसने अपने पाव आप कुल्हाड़ी मार ली।

असमीया: **हातर कुठार भरित मारा** (**अपने हाथ की कुल्हाड़ी पाव पर मारना**)= अपने अनिष्ट कारण स्वयं बनना। **वाक्य**: बरलर बाहत हात दी तोई हातर कुठार भरित मारिलि (मधुमक्खी के चट्टे में हाथ डालकर तूने अपने हाथ की कुल्हाड़ी पाव पर मार ली)।

नीतिज्ञान: इंसान को जानबूझकर कुछ ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिसके कारण उसे बाद में पछताना पड़े। अर्थात हमेशा इंसान को सूझबूझ के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

3) हिंदी: **पांचों उँगलियाँ घी में**= अधिक से अधिक मुनाफ़ा, **वाक्य:** श्याम जी व्यापार के धनी हैं; ऐसे में बेटे को भी अच्छी नौकरी मिल गई, तो भाई क्या बात !! अब तो उनकी तो पांचों उँगलियाँ घी में हैं।

असमीया: **गाखीरते महर खुटि** (**अधिक से अधिक मुनाफ़ा होना**): **वाक्य**: एनेई तार खेती भाल ताते आकौ एईबार दुजनी कोई खिरती गाय, वाह भाई तार तो गाखिरते महर खुटि होई गल। (उसकी खेती तो वेसे ही अच्छी है, ऊपर से अब दो-दो गाय दूध देती हैं, उसका तो मुनाफ़ा बढ़ता ही जाएगा)।

नीतिज्ञान: कुछ लोगों का भाग्य इतना अच्छा होता है कि तरक्की होने के साथ साथ हर बार लक्ष्मी उन्हीं का द्वार खटखटाती हैं, भाग्यशाली व्यक्तियों के लिए ऐसी बात कही जाती हैं।

4) हिंदी: **घोड़े बेचकर सोना**= एकदम बेफ़िक्र होकर रहना; **वाक्य**: अपने चारों बेटियों को विदा कर दिया; अब तो बस घोड़े बेचकर सो जाओ !!

असमीया: **नाकत तेल दि सुइ थाका** (**नाक में तेल डालकर सो जाना**)= चिंतामुक्त होकर रहना; **वाक्य**: बसरेकीया परीक्षार पिसत मोहोने नाकोत तेल दि सुइसे। (वार्षिक परीक्षा के बाद मोहन बेफ़िक्र होकर सो रहा है)

नीतिज्ञान: दोनों ही क्षेत्र में आपात दृष्टि से इसका अर्थ

बेफ़िक्र होना प्रतीत होता हैं; परंतु इसके अंतराल में और एक अर्थ छिपा हुआ है; जब मनुष्य जरूरत से अधिक बेफ़िक्र होने लगता है तब उसे आनेवाले विपदाओं का आभास नहीं हो पाता हैं। इसीलिए व्यक्ति को हमेशा सजग रहना चाहिए।

5) हिंदी: **उल्टी गंगा बहाना**=प्रतिकूल कार्य; **वाक्य**: बच्चे जब बिना डाटे पढ़ाई करने बैठ जाते हैं; तब माँ के लिए उल्टी गंगा बहने के बराबर ही प्रतीत होता है।

असमीया: **सुर्ज्य पश्चिमत ऊलोआ** (सूर्य पश्चिम से उगना)= प्रतिकूल कार्य का होना; वाक्य: सदाय दहताले शुइ थोका माधवक काउरी पुआते फुरिबोले जुआ देखि गाओर मानुहे बोले-आजी देखोन सुर्ज्य पश्चिमत उलाल(रोज़ दस बजे सो कर उठने वाला माधव जब प्रातःकाल में उठकर घूमने गया; तो गाँववालों ने कहा-भाई आज सूरज पश्चिम से कैसे निकाल आया)

नीतिज्ञान: हमारे समाज में जब अचानक लीक से हटकर कोई काम होता हैं, तो लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं; अपने आखों पर मानो यकीन ही नहीं कर सकते हैं।

तुलनात्मक समीक्षा : दोनों भाषाओं के मुहावरों के अध्ययन के बाद यह बात सामने आती है कि इन दोनों में अधिकतर समातना ही परिलक्षित होती हैं। केवल कही कही भोगलिक प्रभाव के चलते शब्दों व साधन का अंतर दिखाई पड़ता हैं। जैसे- हिन्दी में उल्टी गंगा बहना से जो अर्थ निकलता हैं, वही अर्थ असमिया में सूर्य पश्चिम में निकलने से आता हैं। उत्तराखंड गंगा नजदीक है और पूर्वाञ्चल में सूर्य जल्दी उदित होता है; इन्हीं कारणों से दोनों भाषा के शब्दों व साधनों में अंतर दिखाई पड़ रहा है, लेकिन दोनों का भावार्थ प्रतिकूल कार्य को ही सुचाता हैं। भिन्न भाषा-साहित्य के इस अनोखी समानता को सभी विद्वानों ने स्वीकार किया हैं। इस क्षेत्र में असमिया विद्वान डॉ प्रह्लाद कुमार बरुआ के शब्दों में, "लोकसाहित्य की विषय-वस्तु और भाव वस्तु के बीच रहे साम्य को देखकर ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सभी देश-काल में लोकसाहित्य एक जैसा ही होता हैं। लोकसाहित्य के इस सार्वजनीन रूप का एक विशेष कारण है। दरअचल में मनुष्य चाहे दुनिया के किसी भी कोने का क्यों न हो, उनकी मौलिक प्रवृत्ति एक जैसी होती हैं। इस कारण लोकसाहित्य में सार्वजनीन विशिष्टता मिलना स्वाभाविक प्रतीत होता हैं।"[5]

लोकोक्तियाँ (कहावतें):

इस लोकसाहित्यिक विधा के अंतर्गत उन कहानियों का शेष रह जाता हैं, जो पूर्व समय में घटित हुई थी। अधिकतर विद्वानों का मानना है कि लोकोक्ति के पीछे कोई घटना या कहानी निहित होती है; और उसके बीत जाने के बाद भी वह लोगों के मुख मुख में प्रचलित होती हैं। यही आगे चलकर लोकोक्ति कहलाती है। लोकोक्ति या कहावतों के बारें एक आकर्षक बात और कही जाती है कि इनमें सांकेतिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, ताकि किसी तीसरे को असली बात मालूम न पड़े। जैसे- कहावतों में 'शत्रु' के लिए हिंदी में 'लोहा' तो असमिया में 'काँटा'(हूल) शब्द का प्रयोग हुआ है। आगे इसका उदाहरण सहित विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा। असमिया विद्वान डॉ लीला गोगोई ने कहा है, "प्रवाद या प्रवचन की सृष्टि किसी घटना की पटभूमि से होती है। उसके बाद उसके समतुल्य घटना के परिणाम को समझाने अथवा तुलना करने के लिए ऐसे प्रवचनों का प्रयोग किया जाता हैं।"[6] भाषा व साहित्य भंडार को बढ़ाने में कहावतों का बहुत बड़ा योगदान हैं। ये वाक्य की शोभा बढ़ानेके साथ परिणाम का आभास भी प्रदान करता हैं। हिंदी और असमिया के कहावतों का अध्ययन कुछ इस प्रकार किया जा सकता हैं,

1) हिंदी: **अंधों में काना राजा**: (मूर्खों में कुछ पढ़ा लिखे लोग); **वाक्य**: लोग ठीक ही कहते हैं अंधों में काना राजा, इसीलिए तो गाँव में डाक डालनेवाला अपने आपको गाँव का विद्वान समझता है।

असमीया: **अंध देशत कनाइ राजा/ आम**

गस नोहोआ थाइत एराइ रजा (अंधे देश काना ही राजा है/ आम का पेड़ जहाँ नहीं है, वहाँ (एरा-असम प्रांत में प्राप्त एक छायादार वृक्ष)साधारण पेड़ ही राजा बन जाता है): मूर्खों में कम पढ़ा लिखा; **वाक्य**: गाँवखोनर भीतरते हाईस्कूल पास माधबे जितुहे उफाइदांग मारे जेन सिएई जगतर पंडित; बोलो राइजे ठिकेइ क'इ आम गस नोहोआ थाइत एराइ रजा, (गाँव का एकमात्र हाइस्कूल पास माधव ऐसे अपनी बढ़ाई करता है कि मानो सबसे ज्ञानी हो, लोग ठीक ही कहते है जहाँ आम का पेड़ नहीं होता है, वहाँ साधारण छायादार वृक्ष ही राजा कहलाता है)।

जनश्रुति : लोग में वर्षों से यह कथन प्रचलित हैं कि जहाँ एकदम से महान अथवा मूल्यवान वस्तु व मनुष्य नहीं रहते हैं, वहाँ साधारण को भी असाधारण का दर्जा मिल जाता हैं,॥..उपरोक्त दोनों कहावतों में एकदम से निरक्षर लोगों के बीच रहे कम पढ़े-लिखे लोगों के बारें कहा गया हैं, जो अल्पज्ञान के कारण अपने आप को राजा मान बैठता है और दूसरे के सामने डींग हाकता फिरता हैं; ताज्जुब की बात यह है कि वहाँ उसे वैसा सम्मान भी मिलता हैं, क्योंकि बाकी सब तो एकदम से अंजान व अज्ञानी होते हैं।

2) हिंदी: **होनहार बिरवान के होत चीकने पात**= होनहार के लक्षण शुरुवात से ही दिखाई पड़ते है, **वाक्य**: सावित्री का बेटा महज आठ साल का हैं, पर बहुत होनहार हैं। पढ़ाई, संगीत, खेलकुद हर दिशा में सबसे आगे रहता है। सच ही तो कहावत है- होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

असमीया: **जि मुला बाढ़े तार दुपातोते सिन**: (जो मुली बढ़ता है, उसके दो पत्ते से ही उसका लक्षण होता हैं)= गुणवान ले लक्षण पहले से ही दिखाई पड़ते हैं। **वाक्य**: हरेन र पुतेके एइ बयसते लोकर वस्तुले चकु दिए, आगोले गोई चोर नहोले'इ होई; कथाते आछे नहोई जी मुला बाढ़े तार दुपातोते सिन। (हरेन के लड़के की नज़र अभी से लोगों की चीजों पर रहती हैं, आगे जाकर कही ये चोर न बन जाये, कहावत भी तो है न कि जो मुली बढ़ती हैं उसके दो पत्ते को देखने से ही मालूम पड़ जाता है।)

जनश्रुति: प्राचीन समय से लोगों का मानना हैं कि जिस प्रकार पेड़ पौधों के उगने के प्राथमिक लक्षण से हम उसके विकास का एक सहज अनुमान लगा सकते हैं और वैसे ही बच्चों के शुरुवाती आचरण से ही उनके आने वाले व्यक्तित्व का आभास होने लगता हैं कि यह बच्चा आगे चलकर कैसा बनेगा।

3) हिन्दी: **तन पर नहीं लत्ता पान खाये अलबत्ता**= झूठा प्रदर्शन; **वाक्य**: धर्मेश की नौकरी तो कबकी छूट गई, पर वह लोगों से कहता फिरता कि अबकी बार पगार दुगना होगा ! बाह रे भाई, तन पर नहीं लत्ता पान खाये अलबत्ता।

असमीया: **गात नाई चाल बाकोलि मद खाय तिनी टेकेली** (शरीर में मांस नहीं नहीं, पर शराब तीन तीन बोतले पी जाता है)= केवल झूठा प्रदर्शन; **वाक्य**: घरत खाबोले भात नाइ सि बपुराई आकौ मद खाबोले टका साधिसे सोआ, बोलो लोके एनेइ नकोई गात नाई चाल बाकोलि मद खाय तिनी टेकेली। (घर में खाने के चावल नहीं, और इसे दारु खरीदने के लिए पैसे चाहिए, लोग ठीक ही कहते है, शरीर में मांस नहीं नहीं, पर झूठा प्रदर्शन नहीं छोड़ता है।)

जनश्रुति: यह बहुत पुरानी कहावत है, व्यक्ति को हमेशा अपने हैसियत के हिसाब से खर्च करना चाहिए, बहुत बार ऐसा होता है कि व्यक्ति एकदम ग़रीब से गरीब होता जाता है किन्तु अपने शौक को पूरा करने के केवल झूठा प्रदर्शन करता फिरता हैं। इससे समस्या का हल नहीं होता है, बल्कि और बढ़ जाती है और लोग उस व्यक्ति का मज़ाक उड़ाने लगते हैं।

4) **या तो इस पार या उस पार/ करेंगे या मरेंगे** = कुछ करने की ठान लेना; पहले जमाने से ही इस कहावत का प्रयोग होता आ रहा है, यह विशेष रूप रणभूमि में बोला जाता है। लेकिन इसकी प्रासंगिकता अब भी वर्तमान है। **वाक्य**: गाँव में पुल चाहिए बोल बोलकर गाँववाले थकहारकर आज जुलूस लेकर

पंचायत की तरफ निकल पड़े हैं। आज तो फैसला हो ही जाए इस बार या तो इस पार या उस पार।

असमीया: **हय रंगामाटी नहोइ गुवाहाटी** (या तो गुवाहाटी नहीं तो फिर रंगामाटी): किसी चीज को पाने का संकल्प कर लेना= यह प्रवचन असम के भूतपूर्व शासक आहोम राजा के जमाने की हैं। लड़ाई के दोरान राज्यों को जीतने के सिलसिले में रणभूमि में इस कहावत का प्रयोग होता था , ऐसा ऐतिसाहिक सूत्र का मानना है। **वाक्य**: प्रवीण हेडमास्टर पेन्सन ओफिसले गोई गोई भागोरि परिसे, सेये आजि रातिपूआते दिनदियाके उलाइसे, खुराए बुलिसे आइ, आजि होइ रंगामाटी नहोइ गुवाहाटी। (हेमास्टर प्रवीण पेन्सन ऑफिस के चक्कर काटकर थक चुका हैं, इसीलिए आज वे सवरे सवरे दिन भर का समय लेकर बोल पड़े, बेटी आज कुछ तो फैसला करके ही लोटेंगे। **जनश्रुति**: यह प्राचीन कहावतों में से है; इसके द्वारा मूलतः संकल्प को ही सूचित किया जाता है। विशेष रूप में युद्धक्षेत्र में जब मरने मारने की बात आती है, तो अक्सर इस कहावत प्रयोग परिलक्षित होता है। यह इंसान को कुछ कर गुजरने का उत्साह प्रदान करता हैं। इस कहावत का प्रयोग ज़्यादातर सकरात्मक क्षेत्र में ही किया जाता हैं। किन्तु कभी कभी इसका नकरात्मक प्रयोग भी देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में भी यह अत्यंत लोकप्रिय है।

5) हिंदी: **लोहे को लोहा ही काँट सकता है**= बुद्धि से गुत्थि सुलझाना /जो जैसा है उस हिसाब से चाल चलना। **वाक्य**: चोर को पकड़ने के पुलिस को भी चोरों वाले हरकत करनी पड़ती है, आखिर लोहा ही तो लोहे को काँट सकता है।

असमीया: **हूलेरे हूल काढ़ा** (काँटा ही काँटे को निकाल सकता है)= सम शक्ति से ही शत्रु का सामना करना। प्राचीनकाल से असम प्रांत में यह कहा जाता है कि जब हाथ में काँटा(हूल) चुभ जाता है तो उसे काँटे से ही निकालना चाहिए, इससे सुरक्षा बनी रहती है। **वाक्य**: गोसाईघरर चोर क धरिबोले होले राति राति गाम दी थाकीबो लागिबो, तह काम सिजिब, बोलो कथाते कय नहोइ हूलेरहे हूल काढ़िबा। (अगर मंदिर के चोर को पकड़ना है, तो वह तभी संभव होगा जब हम रात रात भर जागकर पहरा देंगे, वह कहावत है ना काँटा ही काँटे को निकाल सकता हैं)

जनश्रुति: यह भी बहुत पुरानी कहावत है; अगर शत्रु का सामना करना हो तो उसके समान ताकतवर होना पड़ेगा और उसके ही जैसे सोचना पड़ेगा। क्योंकि तभी हम उसके अगले चाल को जान पायेंगे। बहुत लोकप्रिय कहावत है यह; इस संदर्भ में 'विष को विष ही काँट सकता है' शीर्षक कहावत भी प्रचलित है।

तुलनात्मक समीक्षा : हिंदी और असमिया साहित्य के कहावतों में नैतिक ज्ञान के अलावा तत्कालीन परिस्थिति व रहन-सहन का भी आभास परिलक्षित होता हैं। बहुत से ऐसे उदाहरण भी पाये जाते हैं जो रणभूमि आदि से जुड़े हुए होते हैं। हमारे दादा-परदादा के जमाने के यें कहावतें हमे अपने पुराने दिनों की यादों के साथ जुड़ाते हैं। महज़ एक, दो बिन्दुओं को छोड़कर अधिकतर क्षेत्रों में दोनों भाषा के कहावतों में समानता ही पायी जाती हैं। जैसे-'लोहे से लोहा काँटना' और 'हूलेरे हूले काढ़िवा'(काँटे से काँटे को निकालना) में भाव एक ही निकलता हैं, केवल शब्दों का अंतर हैं। असम पहाड़ों से घिरा रहता है, शायद इसीलिए शत्रु-पक्ष के चाल को सूचित करने के लिए काँटे (हूल) शब्द का प्रयोग किया गया होगा और उधर लोहे शब्द का...!! लोकसाहित्य के बारें में कोई सही तथ्य या दावा तो नहीं किया जा सकता है, बस इसपर अनुमान लगाया जा सकता है। जो कुछ भी कहावतों के प्रयोग से वाक्य व कथन में सजीवता आ जाती हैं।

उपलब्धियां : प्रस्तुत शोध-पत्र के विश्लेषण से निम्नलिखित उपलब्धियां प्राप्त होती हैं; यथा:

(1) हिंदी और असमिया भाषा में प्राप्त लोकोक्ति और मुहावरों में तत्कालीन समाज एवं लोक-जीवन प्रतिफलित हुआ हैं।

(2) हिंदी और असमिया भाषा की लोकोक्ति और मुहावरों की एक तुलनात्मक समीक्षा के उपरांत यह स्पष्ट होता है कि दो अलग अलग अपभ्रंश से उत्पन्न होने के बावजूद दोनों भाषाओं के लोकोक्ति और मुहावरों में जहां भाव की समानता देखने को मिलती हैं; वही शब्द-चयन में भिन्नता परिलक्षित होती है।

निष्कर्ष: "भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।"[7] मुहावरे और कहावते किसी भी भाषा-साहित्य की अनमोल संपत्ति हैं, जो उसे उसके जड़ से जोड़े रखता हैं। इनमें निहित संदेश बहुत जरूरी एवं लाभदायक सिद्ध होता हैं। इसके अलावा यैं दोनों भाषा को अधिक सजीव व आकर्षक बनाने में माहिर हैं। समय व परिवेश के साथ साथ इनमें परिवर्तन आना स्वाभाविक हैं, जिससे इसके विकास का मार्ग खुलता है। पुराने जमाने और नए जमाने के मुहावरे और कहावतों में काफ़ी अंतर देखने को मिलता हैं। समय के साथ साथ इनमें कुछ नए चीजों का समावेश होता हैं तो कुछ धीरे धीरे लुप्त होते जाते हैं। असमिया विद्वान सत्येंद्रनाथ शर्मा के शब्दों में, "युगों के परिवर्तन के साथ साथ मुहावरे और कहावते जन्म लेते हैं और लुप्त हो जाते है.....जो तुलनात्मक दृष्टि से कालनिरपेक्ष होता है, केवल वही अधिक दिनों तक प्रचलित रहता है। इसीलिए आधुनिक सभ्यता के साथ बेमेल रखनेवाले अनेक कहावते और मुहावरे अब अप्रचलित हो गई हैं।"[8] बहरहाल इसके प्रस्तुतिकरण और संरक्षण के प्रति सभी को ध्यान देना चाहिए; वर्तमान इसकी प्रासंगिकता को देखते हुए इसके संरक्षण का विविध प्रयास किया जा रहा हैं।

संदर्भ सूची :

1. प्रसाद, डॉ. वासुदेवनंदन, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पृ.सं.254, भारती भवन, पटना, 2013 .
2. प्रसाद, डॉ वासुदेवनंदन, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पृ.सं.231, भारती भवन, पटना, 2013.
3. शर्मा, डॉ सत्येंद्रनाथ, असमिया साहित्यतर समीक्षात्मक इतिवृत्त, पृ.सं.20, सौमार प्रकाश, गुवाहाटी-2011.
4. गोस्वामी, यतीद्रनाथ, असमीया साहित्यतर चमु बुरंजी, पृ.सं.29, मनि-मानिक प्रकाशन, गुवाहाटी, 1986.
5. सं. बरुआ, डॉ प्रह्लाद कुमार, असमिया लोकसाहित्य, पृ. सं.-5, असम साहित्य सभा-डिब्रुगढ़, 2001.
6. गोगोई, डॉ लीला, असमिया लोक-साहित्यर रुपरेखा, पृ.सं.37, बनलता प्रकाशन, गुवाहाटी, 2001.
7. तिवारी, भोलानाथ, भाषाविज्ञान, पृ.सं.1, किताब महल, 2004.
8. शर्मा, डॉ सत्येंद्रनाथ, असमिया साहित्यतर समीक्षात्मक इतिवृत्त, पृ.सं.21, सौमार प्रकाश, गुवाहाटी-2011.

•